ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL
वर्ष : 09, अंक : 36, अक्तूबर-दिसंबर 2022

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

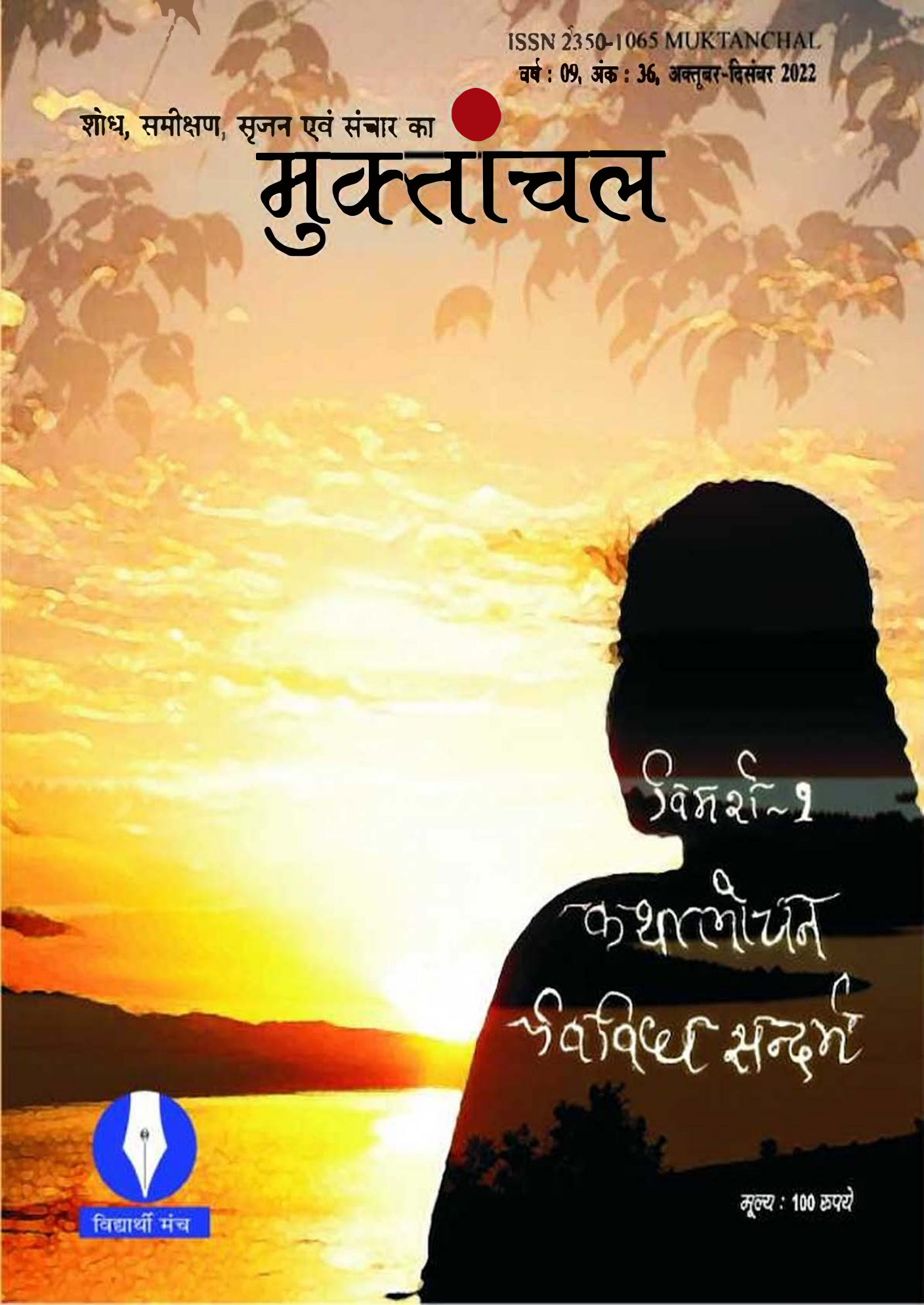

विद्यार्थी मंच

मूल्य : 100 रुपये

उस पार से.....

राजेंद्र यादव
(28 अगस्त 1929 - 28 अक्तूबर 2013)

आज जो चीज़ लेखक को नया बनाती है वह है यथार्थ को रू-ब-रू देखने की दिशा में हर पूर्वाग्रह और परम्परागत दृष्टिकोण को छोड़ने की अकुलाहट हर लीक को तोड़ने का आक्रोश। शायद परम्परा-यानी, चली आती धारा के प्रति, तीव्र असन्तोष, भीतरी घृणा महसूस किये बिना न तो किसी लोक को छोड़ा जा सकता है, न उसे आगे बढ़ाया जा सकता है। घर के छोटे और ओछेपन, या ना-काफ़ी होने से जब तक मन सचमुच भीतर तक डिस्टास्टेड नहीं हो उठता, तब तक न तो उस घर में कोई संशोधन और इज़ाफ़ा करने की बात सोची जा सकती है, न उसे बदलने की। नये कथ्य की समृद्धि को अनुभव करते हुए, तत्कालीन परम्परा के प्रति यह असन्तोष और वितृष्णा ही किसी लेखक को नया बनाते हैं, मात्र सम-वयस्क और समकालीन होना ही नहीं। धारा के प्रति उसकी यह घृणा भले ही उसे परम्परा-ध्वंसकों की किसी परम्परा में जोड़ देती हो- विद्रोहियों की एक परम्परा से।

एक दुनिया : समानान्तर
1993

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

वर्ष - 9, अंक - 36, अक्तूबर-दिसंबर 2022

संपादक : **डॉ. मीरा सिन्हा**

प्रकाशक : **विद्यार्थी मंच**

प्रबंध संपादक : **सुशील कुमार पांडेय**

कला संपादक : **शुभागता श्रीवास्तव**

आकल्पक : **लखनपति झा**

प्रसार प्रबंधक : **रमेश कुमार शर्मा**

प्रूफ संशोधक : **परमजीत पंडित**

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

प्रो. दामोदर मिश्र : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, विद्यासागर विश्वविद्यालय

डॉ. कृष्ण कुमार : अध्यक्ष, गीतांजलि बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, (बर्मिंघम, यू.के.)

डॉ. पंकज साहा : खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

डॉ. अरुण कुमार : प्राक्तन प्रोफेसर, राँची विश्वविद्यालय

डॉ. रणजीत सिन्हा : मिदनापुर कॉलेज (ऑटोनोमस), मिदनापुर

डॉ. निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल

डॉ. रामप्रवेश रजक : हिंदी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन :

विनोद यादव, विनीता लाल, सरिता खोवाला एवं बलराम साव - 89107 83904

संपर्क एवं प्रसार :

चाँदनी सिन्हा (बर्मिंघम, यू.के.) : +447411412229

कुणाल किशोर (के.वि. हिमाचल प्रदेश): 7998837003

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ. धूपनाथ प्रसाद : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

डॉ. विश्वजीत भद्र : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय)

प्रो. मोहम्मद फ़रियाद : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

डॉ. सुनील कुमार 'सुमन': प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

प्रो. मंजु रानी सिंह : विश्वभारती, शांतिनिकेतन

प्रो. अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात

प्रो. मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय

डॉ. सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता

डॉ. अंजनी कुमार झा : एसोसिएट प्रोफेसर, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी (बिहार)

डॉ. शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता

मुक्तांचल: A/c- 50200014076551, HDFC BANK BURRABAZAR, KOLKATA- 700007, IFSC CODE- HDFC0000219

संपादकीय कार्यालय :

आधुनिक अपार्टमेंट, 6/2/1 आशुतोष मुखर्जी लेन सलकिया, हावड़ा-711106, पश्चिम बंगाल

संपर्क - 033-26751686, 9831497320, 9681105070

ई-मेल - muktanchalpatrika@gmail.com
sinhameera48@gmail.com

मुद्रक : शिक्षण, 50, सीताराम घोष स्ट्रीट, कोलकाता-700009

पत्रिका का मूल्य : एक अंक - 100 रुपये

सदस्यता शुल्क : वार्षिक- 600 रुपये, आजीवन-3000 रुपये

संस्थाओं के लिए : वार्षिक-600 रुपये, आजीवन-3500रु.

डाकखर्च (प्रत्येक अंक के लिए)अतिरिक्त 30 रुपये।

अवस्थिति

शोध समीक्षण सृजन संचार

6 संस्तुति

आलेख

7 **पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'** अमरकान्त 'हत्यारे' का सन्दर्भ

20 **धनेशदत्त पाण्डेय** सृजनात्मक साहित्य की अनुवांशिकी : सन्दर्भ चन्द्रकिशोर जायसवाल की कहानियाँ

36 **योगेश तिवारी** रचनालोक से निर्वासित अखिलेश का उपन्यास 'निर्वासन'

अनुशीलन

43 **प्रीति सिंह** अमृता प्रीतम : प्रेम के पैराडाइज की अप्सरा, स्त्री उन्मुक्तता की बेमिसाल मिसाल

48 **संजय देसाई** भिन्न परिवेश के सच्चाइयों की दास्तान : 'अंतिम साक्ष्य'

53 **सादिया परवीन** जनपक्षधर लेखिका मेहरून्निसा परवेज की कहानी 'सूकी बयड़ी' : एक सिंहावलोकन

शोधार्थी की कलम से

56 **प्रेम कुमार साव** जीवन और उसकी गति के कहानीकार : शेखर जोशी

संस्मृति

61 **सतीश नूतन** शहर में शलभ

68 **निशान्त** स्मृतियों में मैनेजर पाण्डेय

कहानी

70 **चन्द्रकिशोर जायसवाल** दगाबाज

74 **शशि काण्डपाल** दरीचा

79 **नीरज नीर** स्मृतियों की रेल में

88 **सीमा प्रियदर्शिनी सहाय** माँ

कथन एवं सृजन

91 **सिद्धेश** कहानी में अनुभव और अनुभूति (कथन)

94 **सिद्धेश** पहचान (सृजन)

शोध

समीक्षण

सृजन

संचार

व्यंग्य

96 **डॉ. पंकज साहा** — हविस

भाषान्तर

98 **तेलुगु मूल : सलीम**
अनुवादक
डॉ. वेन्ना वल्लभराव — कला गुमराह है

कविता

104 **सरिता खोवाला** — कतरा भर धूप, दोयम दर्जे की औरतें..., अडिग वो दोनों, नवजात की तरह, रंगहीन दीवारें, मनीप्लांट की तरह, संगेमरमर की तरह

106 **अमित कुमार अम्बष्ट** — अलाव, मिसरिया डोम, गर्म हैं तस्वीरें, फ़लक पर बैठा खुदा

107 **डॉ. अरुण तिवारी 'गोपाल'** — गज़ल–1, गज़ल–2, गज़ल–3

108 **सुषमा कुमारी** — 'किताबें', 'घर के बरगद', 'सम्मान'

109 **सविता दास सवि** — 1. साथ-साथ, 2. कुछ नहीं, 3. बची हुई सुंदरता

110 **सोनम सिंह** — अहिल्या, छुट्टियाँ

111 **सौरभ सतर्ष** — 1. बूँदभर प्यार, 2. तस्वीर तुम्हारी, 3. अंजुरी भर नेह, 4. इष्ट की प्रतिमा सी

पुस्तकायन

113 **धर्मेंद्र कुमार पासी** — समय का सच रचती कहानियां -'छप्पन छुरी और बहत्तर पेंच'

119 **मृत्युंजय** — बात करती, बोलती कविताएँ

गतिविधियाँ

122 **सुषमा कुमारी**
रोहित प्रसाद 'पथिक' — 'मुक्तांचल' पत्रिका के 35वें अंक का लोकार्पण प्रख्यात आलोचक डॉ. मैनेजर पाण्डेय एवं कथाकार शेखर जोशी पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

संस्तुति

बदलते समय में आस-पास कहीं भीं कुछ स्थिर नहीं है या कम से कम वैसा ही नहीं है जैसा कभी था। वह अच्छा भी था - बुरा भी - आज भी भिन्न-भिन्न मायने में अच्छे और बुरे का समीकरण सामने है। वास्तव के आईने से रूबरू हम पेशोपेश में होते हैं कि यह बदली हुई शक्ल कहाँ से आ गई और इसे कैसे 'ट्रीट' किया जाए! लिहाजा, माप-तौल के अलग पैमानों की तलाश बनती रहती है। साहित्य-समीक्षण में भी चिंतन के नए आयाम जुड़ रहे हैं - रचना के नए धरातल पर हमेशा शिल्प की नई भंगिमा उपस्थित होती है, क्योंकि नए भावबोध के सम्प्रेषण को कारगर करना होता है।

इधर, बदलती हुई दुनिया में साहित्य के विद्यार्थी बहुत 'कम्फर्टेबल' नहीं है क्योंकि उन्हें बहुत कुछ ले-देकर चलना होता है। आज के दौर के हिसाब से उन्हें 'फिटनेस' चाहिए होती है, यथा कागज और कलम' का जमाना नहीं रहा मनन और चिंतन तथा उसके संप्रेषण पर भी तेज तकनीक हावी है। विद्यार्थी सनद हासिल करने की धुन में इतने उलझे होते हैं कि ठहरकर सोचना-समझना उनके लिए मुश्किल होता जा रहा है। आनन-फानन में लाँघते-फाँदते वे अपने अध्ययन की दहलीज पार कर लेते हैं, महत आकांक्षा की पूर्ति के साथ ही जीवन की बगिया में फूल ही फूल महक उठते हैं - उपभोक्ता संस्कृति अपने आगोश में भर लेती है बस, फिर तो आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास की स्थिति आम है।

सबसे मजबूर इंसान पाठक के बाजार में खड़ा लेखक है जिसे चर्चा के लिए कई जुगाड़ लगाने पड़ते हैं, तरह-तरह की छतरियाँ और किस्म-किस्म के घराने फैले हुए हैं - रचनाकार अपनी रचना के साथ बिना दरवाजों को खटखटाए क्या एक शुद्ध पाठक एवं एक सबल समीक्षक को नहीं पा सकता? जाहिर सी बात है कि इस 'क्राइसिस' से निकलना आवश्यक होगा। इसी कड़ी में 'मुक्तांचल' के सम्पादन एवं प्रकाशन का संकल्प विद्यार्थी मंच ने लिया है, हम चाहते हैं कि हमारा प्रत्येक अंक कुछ विमर्श लेकर आए और उस विमर्श पर सबकी अपनी-अपनी राय, मत-अभिमत जारी हो तथा संवाद की शृंखला बन सके। साहित्य में संवाद की डोर थाम कर चलते रहना हम अध्ययन-अध्यापन से जुड़े लोगों का परम लक्ष्य है।

अस्तु, इस अंक में कथालोचना के विविध सन्दर्भों को सृजन एवं समीक्षा के माध्यम से रखा गया है। अगला अंक (जनवरी-मार्च, 2023) काव्यालोचन एवं सृजन पर विशेष रुप से केन्द्रित होगा, आशा है, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं अध्ययनकर्ता मुक्तांचल के लक्ष्य को ध्यान में रखकर अपने लेखकीय अवदान से उसके द्वारा अभिकल्पित सफल अकादमिक परिवेश की सृष्टि में सहायक होंगे।

संपादक